Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

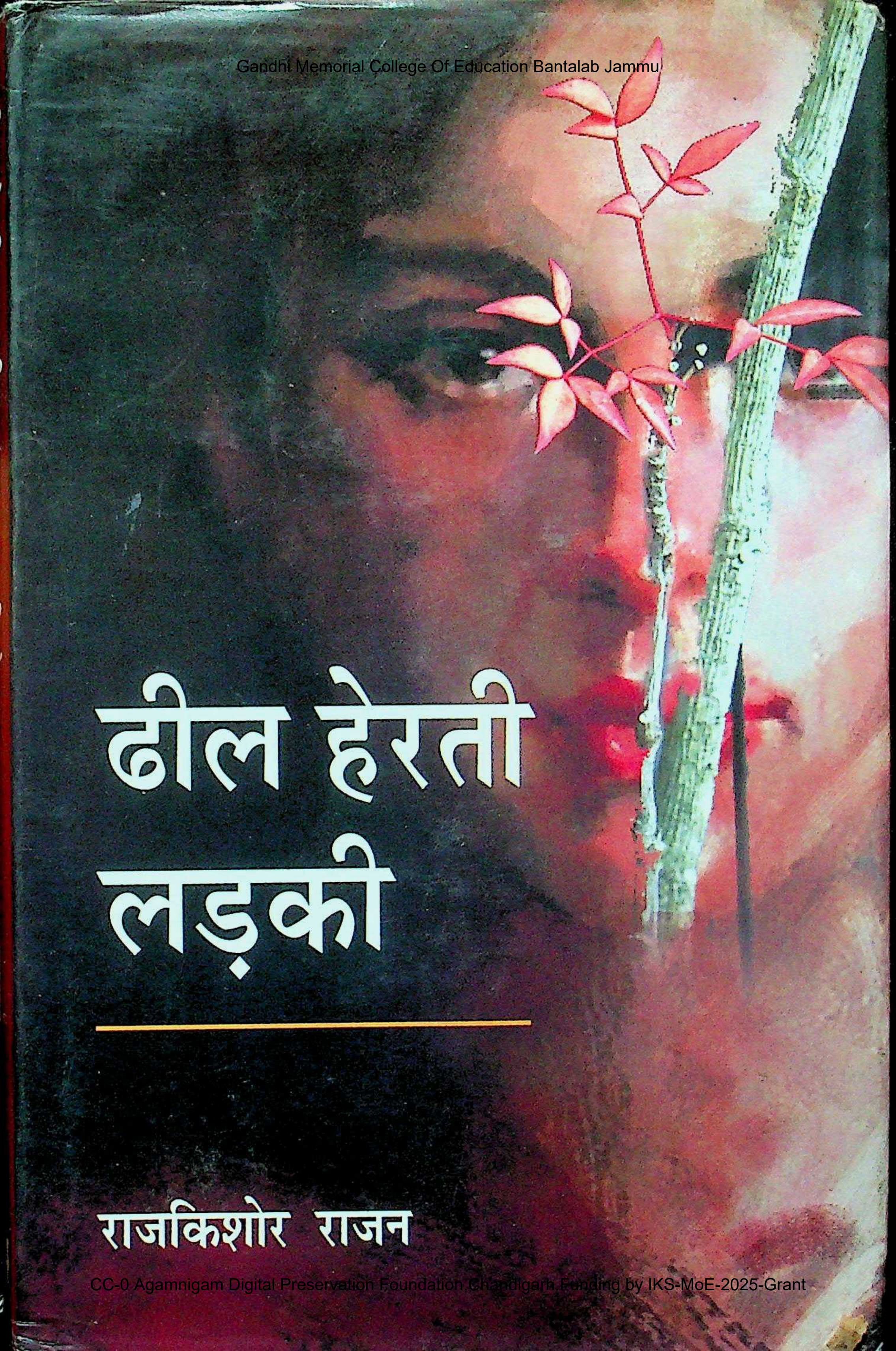

ढील हेरती लड़की

राजकिशोर राजन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation Chandigarh Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

'बस क्षण भर के लिए' और 'नूरानी बाग' के बाद राजकिशोर राजन के कविकर्म का महत्त्वपूर्ण पड़ाव है उनका नया कविता-संग्रह – 'ढील हेरती लड़की।' अपने समय और संबंधों के आरपार देखने की कोशिशें राजन की इन नयी कविताओं में कामयाब हुई हैं। शहर और गाँव की दूरियों को नापते हुए यह कवि जनपदीय चेतना का जीवंत स्पर्श बहुत ही खूबसूरत ढंग से रचता है। इनकी कविताओं में काव्य का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनकर आये 'भगत बाबा', 'बनिहारिन', 'याद भाई', 'धनमातो काकी', 'इतवारी फुआ' जैसे पात्र उनकी कविताओं को विश्वसनीय तो बनाते ही हैं, साथ ही जीवन-संघर्ष की चुनौतियों का साक्षात्कार भी करवाते हैं।

राजकिशोर राजन की 'सपने में रोटी' कविता अभावमय जीवन का दारुण चित्रांकन है तो 'एक वृद्ध रिक्शाचालक' कविता बढ़ती हुई संवेदनहीनता का रेखांकन है। 'सत्ता का कठपुतली नाच' और 'जंतर-मंतर' सियासत पर गहरा व्यंग्य है तो 'मचान' कविता दादा के बहाने ग्राम्यजीवन का सच है। तेजी से बदलते समय की पदचापें इनकी कविताओं में सुनी जा सकती हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Poetry

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढील हेरती लड़की

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढील हेरती लड़की

(कविता-संग्रह)

राजकिशोर राजन

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu.
Acc No.... 5166
Dated.... 28/12/23

प्रकाशन संस्थान
नयी दिल्ली-110002

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रकाशक
प्रकाशन संस्थान
4268-B/3, अंसारी रोड, दरियागंज
नयी दिल्ली-110 002

मूल्य : 200.00 रुपये
प्रथम संस्करण : सन् 2012
ISBN : 978-81-7714-446-8
आवरण : जगमोहन सिंह रावत

शब्द-संयोजन : कम्प्यूटेक सिस्टम, दिल्ली-110032
मुद्रक : बी. के. ऑफसेट, दिल्ली-110032

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पूजनीय बाबूजी

एवं

प्रिय गुड्डू को

जिन्हें अब कभी

देख नहीं पाऊँगा

अपनी कविताएँ

कभी सुना

नहीं पाऊँगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पुरोवाक्

'बस क्षण भर के लिए' और 'नूरानी बाग' के बाद राजकिशोर राजन के कविकर्म का महत्त्वपूर्ण पड़ाव है उनका नया कविता-संग्रह—'ढील हेरती लड़की।' अपने समय और सम्बन्धों के आरपार देखने की कोशिशें राजन की इन नयी कविताओं में कामयाब हुई हैं। शहर और गाँव की दूरियों को नापते हुए यह कवि जनपदीय चेतना का जीवंत स्पर्श बहुत ही खूबसूरत ढंग से रचता है। इनकी कविताओं में काव्य का महत्त्वपूर्ण हिस्सा बनकर आये 'भगत बाबा', 'बनिहारिन', 'याद भाई', 'धनमातो काकी', 'इतवारी फुआ' जैसे पात्र उनकी कविताओं को विश्वसनीय तो बनाते ही हैं, साथ ही जीवन-संघर्ष की चुनौतियों का साक्षात्कार भी करवाते हैं।

राजकिशोर राजन की 'सपने में रोटी' कविता अभावमय जीवन का दारुण चित्रांकन है तो 'एक वृद्ध रिक्शाचालक' कविता बढ़ती हुई संवेदनहीनता का रेखांकन है। 'सत्ता का कठपुतली नाच' और 'जंतर-मंतर' सियासत पर गहरा व्यंग्य है तो 'मचान' कविता दादा के बहाने ग्राम्यजीवन का सच है। तेजी से बदलते समय की पदचापें इनकी कविताओं में सुनी जा सकती हैं।

कवि राजन का यह कहना गौरतलब है कि—''मैं जहाँ रहता हूँ, हर आदमी, चाहे वह रिक्शावाला, होटलवाला, पालवाला, सब्जीवाला, फेरीवाला या स्कूल-कॉलेज जाते विद्यार्थी हों, इनमें मैं कुछ-न-कुछ जानता-सीखता रहता हूँ। इसलिए मेरी कविताओं में ऐसे पात्रों और उनकी जीवनदशाओं की उपस्थिति ज़्यादा है। इसके अलावा अपने गाँव के खेत-खलिहान में घूमता हूँ इसलिए वहाँ की माटी की गंध मेरी कविताओं में रची-बसी है।'' इस बयान में सच्चाई है और कविताएँ इस सच्चाई की साक्षी हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक बात और। जिस प्रकार कवि का सोच-संवेदन समय सजग है ठीक उसी प्रकार उनका काव्यविवेक भी सचेत है। काव्यरचाव के दौरान शब्दचयन और शब्दप्रयोग के प्रति कवि राजन अत्यंत सावधान हैं। सीधे लोक से उठाए शब्दों की ताज़गी और ऊर्जा को उनकी कविताओं में महसूस किया जा सकता है। सुख की चाय में दुःख के नमक का स्वाद कोई शब्द-सजग कवि ही महसूस कर सकता है।

राजकिशोर राजन के कविता-कर्म का एक अन्य वैशिष्ट्य यह भी है कि वे अपनी कविताओं में 'अदृश्य का दृश्य' और 'दृश्य का अदृश्य' रचने में सिद्धहस्त हैं। इसी वजह से वे 'सारतत्त्व' और 'छायाप्रतीति' के अन्तर को उद्घाटित कर सके हैं।

राजन के पास पाँख वाली आँख है। बेहतर दुनिया की ख्वाब उनकी आँखों में हमेशा तैरता रहता है। निराशा और हताशा की बजाय यह कवि विश्वास की डोर थामकर आगे बढ़ने में विश्वास करता है। 'आँखों की चमक' कविता में इस विश्वास की चमक को देखा जा सकता है। कवि राजकिशोर राजन जीवन को नीरस गद्य की तरह नहीं, वरन् सरस पद्य की तरह जीने की चाहत के कवि हैं।

कवि राजन के इस नये कविता-संग्रह का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ।

–डॉ. रमाकांत शर्मा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुक्रम

पुरोवाक्	(*viii*)
चुनाव	13
सपने में रोटी	15
एक वृद्ध रिक्शाचालक के नाम	16
स्रोत	18
हेडमास्टर	19
मचान	21
बेनीमाधोपुर	23
भगत बाबा और गाँव चाँदपरना	24
अदृश्य का दृश्य	26
आँखों की चमक	28
इन दिनों—याद भाई	30
रूपनारायणपुर	31
काव्य-संसार	32
ऊर्वरिस्तान से लौटते	34
एकरस गद्य	36

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतिकार	38
नरक	40
बाबा बटेसरनाथ से भेंट	41
पिंगपिंग	43
उचर तो कागा	44
महानगर	46
इश्किया बाबा	47
कठपुतली नाच	48
अपने शहर में	49
पापकर्म	51
राष्ट्रीय अवकाश	53
एक संतुलित आदमी के नाम	55
जंतर-मंतर	56
उस पार न जाना मानुषी	57
एक अधेड़ का प्रेम पत्र	59
मिट्टी	60
तारीख	61
मध्यांतर के बाद की फ़िल्म	63
खेल	64
हादसा	66
समय	67
चिड़चिड़ेपन की दवा और एक बूढ़ा	68
रवीन्द्र सरोवर के पानी में	70

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उलाहना	72
विचार	73
दलदल	75
लोकतंत्र का पहला पाठ	76
शहर में बाबा	77
जानकार लोगों के नाम	78
एक शहरी की एक कथवाचक से भेंट	79
ताल़सोनापुर	81
पिता के आँसू	83
एक कवि को सुनते हुए	85
बातचीत	87
निहाल होने के दिन	89
सुखबर	90
अपत कँटीली डार	91
खुशरंग तितलियाँ	93
ऐसा क्यों कविते	95
अदूरदर्शिता	96
तौल	97
चल चंदनवा	98
भाग्यवान	100
चुटकी भर दुख	101
शहाब भाई की कविता	103
बेवजह का दिन	106

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सलामत	107
पहचान	109
होड़	110
सर्वसम्मत	111
वे कुछ अग्रज हमारे	112
कागज-कलम	114
जंगबहादुर उर्फ जँगली	115
साथ	117
कामरूप	119
क, ख, ग	121
सुखमय प्रस्थान	123
छठी इंद्रिय	125
कामाख्या	127
घोड़ा और घास	129
ढील हेरती लड़की	130
अनुवाद	131
इस पार से	132
विषाद	133
अंतहीन	134
शब्द-शब्द	135

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुनाव

मैं नवागंतुक उन ऐश्वर्यशाली शब्दों को देखता रहा
जिनसे कविगण लिख चुके थे सैकड़ों काव्य, महाकाव्य
वे शब्द चमकते-दमकते मुझे नभ में टँगे सितारे लगे
जिन्हें मैं देख सकता, पढ़ सकता और बस
प्रसन्न हो सकता था

शब्दों को मनाने और अपना बनाने के लिए
शहर, गाँव, निर्जन-प्रांतर कहाँ-कहाँ तो नहीं जाना पड़ा
जहाँ कुछ शब्दों को चुन सकता
उन्हें थोड़ा-बहुत अपना कह सकता

उन प्रयोगशील कवियों की तरह प्रतिभासंपन्न भी कहाँ था!
जो गढ़ लेता नये शब्द और
चकित कर देता सभी को

कुछ ने देशज-विदेशज से
कुछ ने तत्सम-तद्भव के बीच
अर्द्धतत्सम को चुन लिया
मैं क्या चुनता !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसे में मैंने कब से कोटर में पड़े
मलिन मामूली शब्दों को
चुन लिया
जिन्हें ठोक-बजाकर छोड़ दिया गया था
खुरचन की तरह किसी और के लिए
वे शब्द भी शायद जोह रहे थे
मेरी बाट

उनसे मिलने के बाद ही जाना
जैसे चुनता है कवि शब्द
शब्द भी पा लेते अपना ठाँव।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सपने में रोटी

नींद में बच्चा
बच्चे के हाथ में रोटी

रोते-रोते सोया है बच्चा
लड़ते-झगड़ते उसे मिली थी रोटी

नींद में रह-रह, चिहुँक उठता
कभी करवट बदलता
पर हाथ से, छूटती नहीं रोटी

कौन समझाएगा उसे
तुम्हारी रोटी, धूल से सनी
उस पर बैठ रही मक्खियाँ
नहीं रहीं ये खाने लायक
फेंक दो यह रोटी

दिल्ली से बहुत दूर
हमारे चाँदपरना गाँव का वह बच्चा
नींद में बुदबुदाता

बच्चे के सपने में रोटी।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक वृद्ध रिक्शाचालक के नाम

रिक्शा ही उनका घर, दालान
बगीचा और खेत-खलिहान

उसमें उन्होंने खिला रखा है
एक फूल
पाँव बराबर हरी-भरी दूब
बोरे में बस रखी है
एक थाली, एक गिलास
एक धोती
एक फटा-पुराना बदरंग कुर्ता

उनकी बूढ़ी हड्डियाँ
पुराने रिक्शे को खींचते
जब होने लगती हैं हलकान
तब वे फिर-फिर भरने लगते
सीने में साँस
और वैसे में किसी नायक जैसे लगते हैं वे
जो मृत्यु की आखिरी साँस लेने से पहले
अनथक लड़ता रहता शत्रु के खिलाफ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पेट और संसार के अंतर्संबंध की कथा
वे वेदव्यास की तरह कहते
पर उस कथा की व्यथा को समझने की फुर्सत
आज किसी के पास नहीं
सभी को कहीं न कहीं पहुँचने की जल्दी।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्रोत

आज कई दिनों बाद
कागज पर
कुछ लिखा मैंने
और देखता रहा

एक पुरानी किताब के
पन्ने पलटते
एक कवि की कविताएँ
पढ़ता रहा

आज फिर,
सूख रहे पौधे में
पानी डाल गया कोई
महसूस करता रहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हेडमास्टर

वह इतिहास की किताबों से
मिटा देना चाहता
प्राचीन सभ्यताओं, संस्कृतियों, विश्वासों के
एक-एक शब्द
उसके लिए, उसी से शुरू होता
विश्व का इतिहास
घृणा है उसे मेसोपोटामिया, सिन्धुघाटी, दजला-फरात
और चीन की ऊँची दीवार से

वह अपने ढंग से बदल देना चाहता
भूगोल
उसका मानना, उसी का देश गोल
बाकी देश चपटे
और चपटों को उसकी गुलामी
सौभाग्य समझकर लेनी चाहिए स्वीकार

एक वही है जहाँ की मिट्टी में खिलते
स्वतंत्रता, समानता, न्याय के लाल-पीले-नीले फूल
उसी के यहाँ वह दीवार
जिस पर माथा टिका
टिका रह सकता संसार का भविष्य

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह विज्ञान को मानता
विध्वंस का ज्ञान
पृथ्वी को सैकड़ों बार नष्ट करने की क्षमता पर
वह बच्चों की तरह उछलता-कूदता
अपने को महाबली मान
कराता हर देश को
अपने चरणामृत का पान

वह गणित को जानता
सिर्फ लेन-देन, नफा-नुकसान की किताब
जिसका पहला और अंतिम अध्याय
मुद्रा और सिर्फ मुद्रा है

वह चाहता, दुनियाभर के विद्यार्थी
उसके यहाँ अर्जित करें ज्ञान
और बन जाएँ उसके प्रचारक
मिटाएँ अपने-अपने देश का अज्ञान
किसी भी शिक्षक को
वह तोता समझ करता है प्रेम
बूढ़ों को कर देता पिंजरों में बंद
या प्राकृतिक न्याय के तहत
उन्हें कर देता संसार से मुक्त

दुनिया के ग्लोब को हाथ में ले
रोज रात को करता
लीलने की कोशिश
और हर बार अपनी असफलता पर
स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी के सामने
धुनता है अपना सिर।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मचान

चचेरे दादा के पास थी
कहानियों की खेती
उन्हें ही पता था
कि कैसे मकई के खेत में, देखते-देखते
जनाना बना था नीलगाय
नदी किनारे चूड़ियों की खनक
आधी रात में बदल गई
कैसे चीख-पुकार में
ठूँठ पाकड़ गाछ पर टँगे
कैसे हँसता था तेलिया-मसान

एक कथा थे दादा
जिसे, वे आजीवन बाँचते रहे

रात्रि भोजन के बाद
लोग जब लुढ़क जाते नींद में
अपने घरों, दालानों और खलिहानों में जाकर
वे काँख में लाठी दबाए, खैनी बनाते
निकल जाते गाँव के पश्चिम
मकई के खेतों के बीच
अपने मचान से रखवाली में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मचान ही था उनका मंच
जिस पर बैठ, वे गाते विरहा, निर्गुण, सोहर
करते सवाल-जवाब, लगाते हिसाब-किताब
धान, ईख, पटवन, रोपनी, सोहनी का

किस पशु, चिरई की बोली
उन्हें नहीं थी ज्ञात
तारों को देख लगा लेते रात का अंदाजा
धूप देख बता देते
साँझ होने में, कितनी है देर

कब के विदा हो गये दादा
और न रहा वो मचान
पर कुछ लोगों की राय है
कि जैसे दुनिया है गोल
और एक सिरे से चला आदमी
वहीं लौट आता है
जहाँ से कभी चला था वो

ठीक उसी तरह
एक दिन लौट आयेगा मचान
चिरई-चुरुँग, धान-मकई सबसे
आदमी जोड़ेगा अपनी पहचान।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेनीमाधोपुर

यहाँ दूर-दूर तक
आम, ताड़ और शीशम के पेड़
कहीं-कहीं बरसों से उम्मीद पर खड़े कुछ खपरैल के मकान

यहाँ की हर चीज
जस की तस
जैसे अनंतकाल से

बस का हॉर्न सुन
दूर-दूर से टा-टा करते बच्चे
बेपरवाह, उड़ती धूल से

महिलाएँ आँचल सँभालतीं
विरक्त भाव से
जैसे कि कोई आ गया हो
सामने अपरिचित मर्द किसी दूसरे गाँव का
बूढ़े अलस भाव से देख
घुमा लेते उपेक्षा से सिर

बस के गुजरते, धूल छँटते
वीरानी फिर घिर जाती
कोई सूत्र ढूँढ़ने लग जाता
शेष दुनिया के साथ
बेनीमाधोपुर।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भगत बाबा और गाँव चाँदपरना

वह बाबा ही थे
जो अपने चाँदपरना नाम के सुदूर गाँव में
खरीदी थी एंग्लोस्वीस घड़ी और मर्फी रेडियो
पहली बार
और उनकी घड़ी-रेडियो को आते थे देखने
टोला-परोसा से ले पड़ोसी गाँव के लोग

वह बाबा ही थे
जो नये जमाने की घोड़ी
सेन एंड रेले साइकिल पर चढ़े थे पहली बार
और हर दिन सांझ होने के बाद
लौटते थे मुँह में पान घुलाते
अपनी घोड़ी की घंटी टनटनाते

'बभन टोली' से लेकर 'बढ़ई टोली' तक की औरतें
खिड़की से झाँकतीं
और करतीं 'बबुआन टोली' की फुटानी पर बहस
जल-भुनकर

बच्चे सड़क पर देखते ही
दौड़ लगाते घोड़ी के पीछे
खटिया पर बैठे बूढ़े

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाल-चाल पूछने के बहाने, बाबा को बिलमाते
और नजर बचाकर घोड़ी को
बारंबार निहारते

बाबा घड़ी के साथ खाते-पीते, सोते-जागते
उसे एक-दो बार देख सुबह लोटा ले शौच को जाते
रोपनी-सोहनी में भी अकसर पहुँचते
अपनी घड़ी, घोड़ी और रेडियो के साथ

पता नहीं उनके प्राणों से प्यारे गाँव में
रिसते-रिसते घुस आया, कहाँ से वह वक्त
कि उनकी घड़ी अब उन्हें ही चिढ़ाने लगी थी मुँह
अब वे उसे नहीं बाँधते कलाई पर
पुराने दालान के एक खोंड़र में रख दिया था हिकारत से
जो कब की विस्मृत कर चुकी थी घूमना
घोड़ी की ठठरी मात्र शेष थी

रेडियो बिना बैटरी तरसते, मर जाने को था कब से आकुल
बाबा के तर्क में भी एक घाव था
मवाद से भरा हुआ
कि अब तो जाना—बनिहार से ले नेटुआ टोली के छोकड़े भी
घड़ी पहन घूमते हैं खेत-खरिहान
साइकिल और रेडियो घर-घर हो गया आम
वैसे में इन चीजों का क्या रहा अर्थ
बबुआन टोले में इन चीजों का रहना ही व्यर्थ

मोहभंग का समय था उनके लिए
जिसे वे घोर कलियुग की संज्ञा देते
बाबा जब तक जीवित रहे
कलियुग की कथा कहते रहे।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अदृश्य का दृश्य

पहली कविता उस बनिहारिन के ऊपर थी
जो बाप-दादा के खेतों में खटते
जवानी के दिनों में ही ठूँठ पेड़ की तरह
श्रीहीन हो गई थी

गाँव के दक्षिण टोले में रहने वाली वह औरत
जब भी मुझे देखती, मुस्कुराती
बबुआजी कहकर बुलाती
और मैं हर बार पश्चात्ताप करता घर लौटता
कि जिस घर ने हरण किया उसका जीवन
उसी घर के लड़के को यह संबोधन
किसी बद्दुआ से कम नहीं

दूसरी कविता उस बेइंतिहा खूबसूरत औरत पर थी
जो उम्र में मुझसे कई वर्ष बड़ी
लंबे-घने काले बालों वाली गजगामिनी थी
जिसका पीछा करते एक चौथाई घूम लिया था
कोलकाता शहर की गलियों को
और आखिरकार पता चला था
पैराडाइज थियेटर के सामने वाले बस स्टॉप पर
कि वह कोई नागकन्या नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अलग-अलग जगहों पर अपने रूप की छाया में
देह बेचनेवाली, एक मामूली वेश्या थी

मुझे अपने पर हँसी आई
कि जिसका काम था ढूँढ़ना ग्राहक
उसे कहाँ-कहाँ मैं ढूँढ़ता रहा
अच्छा हुआ उसने, मुझे ग्राहक नहीं समझा
और मेरा मान रख लिया

जो देखा, समझा, जाना
उन पर लिखीं कई-कई कविताएँ
वे सिर्फ बाहर-भीतर की बात नहीं
उनमें बहुत कुछ है मेरे बारे में भी
जो मुझे भी पता नहीं

कभी कोई ढूँढ़ लेगा मुझे
मेरे नहीं रहने के बाद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आँखों की चमक

कई दिनों बाद
जर्द चेहरे पर
लाली झिलमिलाई है
कवि के संसार में
कविता की एक पंक्ति
उतर आयी है

शुष्क खेतों में
झरने लगी हैं वर्षा-बूँदें
वनस्पतियों की काया हरियाई है
भौरों ने फूलों के कान में
सीटियाँ बजाई हैं

रँग चुकी पृथ्वी होठ
कबूतरों ने पाँखें खुजलाई हैं
रोम कूप तक खुल चुके कवि के
दिन तो दिन, रात भी
अपनी सूरत बदलकर आई है

कई दिनों बाद
उँगलियों में नृत्य कर रही कलम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और इस आत्ममुग्ध, बाजारू समय में
जब उम्मीद को भी बचपना लगे
उम्मीद की बातें
कवि की आँखों की चमक
फिर लौट आई है।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन दिनों–याद भाई

कैसे हो याद भाई !
क्या हाल-चाल है
बिसरा के गये तबसे
मेरा बहुत बुरा हाल है

गैर तो गैर, अपने भी
बिना जरूरत नहीं करते याद
मैं किसी को याद आऊँ, मन ही मन
करता हूँ फरियाद

जो भी मिलता
हड़बड़ी में मिलता
चिहा कर देखता
कुछ याद आने के पहले
फिर भूल जाता

कोई किसी को याद आए
किसी युद्ध से कम नहीं
यह कैसा रोग लगा के
टकस भये याद भाई
हमारी याद कभी आए
तो लौट आना याद भाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रूपनारायणपुर

सामने घूम रहा था रूपनारायणपुर
किसी कोने में दुबका
लाजुक, जनविहीन
प्यारा रूपनारायणपुर
उस कवि की तरह मैं भी
कहाँ भूल पाया, जो देखा था
रूपनार्याणपुर में
सिर्फ रूपनारायणपुर को

कभी उतरा नहीं उस स्टेशन पर
जो देखता
रूपनारायणपुर का रूप
घूमता और ढूँढ़ता
नारायण को

हजारों स्टेशनों से गुजरना पड़ा
कहीं न कहीं पहुँचने के लिए
पर हर स्टेशन में खोजता
रूपनारायणपुर?

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

काव्य-संसार

आपने उनकी बात सुनी
तो सुनते रह जाएँगे
आपने अपनी बात कही तो
वे बुरा मान जाएँगे

यहाँ जो जहाँ है
ठहरना तो दूर
किसी और को देखना भी
मुनासिब नहीं मानता

ऐसे मोहमुक्त, निर्दयी संसार में
मैंने एक प्रेम कविता लिखी
और हाथ में लिये
घूम रहा हूँ, बरसों से
गाँव-गाँव, शहर-शहर
दिल्ली और पटना
इसे कोई पढ़नेवाला नहीं
कोई सुननेवाला नहीं

हद तो यह कि कविता की नायिका
वह प्रेमिका भी मेरी नहीं रही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जिस दिन सुनाई थी उसे अपनी कविता
मुझ पर लानतें भेजती, पैर पटकते चली गई
यह कहते हुए कि उसके प्रेम को मैंने
बना दिया किताबी, कर दिया जगजाहिर
मेरे जैसा आदमी क्या खाक करेगा प्रेम

काव्य-संसार के आचार्यगण, चिंतकों
लेखक-कवि, संपादक-गण
कम से कम आप
मेरी कविता तो सुनें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऊर्वरिस्तान से लौटते

जहाँ लोगों के स्वभाव में ही अभाव है
इन जगहों का नाम
अपने देश में ऊर्वरिस्तान है

आदमी मिलेगा तो किताब के पन्ने-सा
जिसके हर पन्ने पर दुख, अफसोस
और नफरत है
सियासत के किस्से, गफलत है
यहाँ आदमी हँसते-हँसते रुआँसा
और आखिरकार ईश्वर को सुमिर शांत हो जाएगा

औरतें मिलेंगी दुनियाभर की शिकायत
आँसू और गोद में नवजात शिशु के साथ
लड़कियाँ रंग-बिरंगे सपनों को
कज्जल आँखों में लगाये
लड़के, दिल्ली-मुंबई-दुबई की ओर टकटकी लगाये
जूता सिलाई से लेकर चंडी पाठ तक का हुनर सीखते
बस्ती अलस उनींदे
मकान आसमान की तरफ देखते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंतर्विरोध इतना, सब कुछ में
कि जो जाए सुलझाने, उलझ जाए खुद ही
मित्रो ! यही वह भू-भाग है
जहाँ मिलते उपन्यास के पात्र
कहानियों के प्लॉट
कविता के लिए आबो-हवा
मगर आज तक ऊर्वरिस्तान को नहीं ज्ञात
वे किताबों में जिन्दा लोग हैं
हैं, नायक-नायिका
और उन्हें सब कुछ भूल
बिसार दुख-दर्द
कुछ देर के लिए सही
हो जाना चाहिए प्रसन्न

और अपने ऊर्वरिस्तान के किस्मत पर
निसार होना चाहिए।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एकरस गद्य

दफ्तर में हमेशा की तरह खटर-पटर
ऊबे हुए पंखों की चकर-पकर
टेबुल पर धरी, बेरंग उदास फाइलों को देखते
पता नहीं कब बन गया
जीवन एकरस गद्य

ऐसे में एक दिन गद्गद गद्य को
अँगूठा दिखाते
बिना कलेवा खाये
सहकर्मियों से बगैर गपियाये
निकल पड़ा दफ्तर से बाहर
एक अश्वत्थ वृक्ष के नीचे बैठ
पता नहीं क्यों लिखने लगा
उसी वृक्ष के बारे में
कैसी तो अद्भुत बात थी
लिखते-लिखते गद्य में
मिलने लगा बूँद-बूँद हरित पद्य
उचरते गये शब्द पत्तों से
वाक्य, डालियों से
आने लगी खुशबू उस कागज से
जिस पर उतर रही थी शायद
कोई कविता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वह कविता ही बोली
कि थोड़ी-सी गुंजाइश हमेशा बची रहती है
पाँव के नीचे सलामत रहती उतनी जमीन
जहाँ दुनिया के एकरस गद्य का
किया जा सकता कभी भी सरस पद्य में अनुवाद

मैं लौट आया दफ्तर
पहली बार अपनी कविता लेकर
कम्प्यूटर गुनगुना रहा था
पंखे की खटर-पटर बुरी नहीं लगी
फाइलों ने इशारा किया
उन्हें आज रख दूँ अलमारी में
सहकर्मियों में जिज्ञासा थी
उन्हें देख, सिर्फ मुस्कुरा दिया

एकरस गद्य पिघल रहा था
उस दिन से, सरस पद्य में।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

प्रतिकार

बुरे दिनों में लिखी कविताओं को
अपनी डायरी में देखा
अच्छे दिनों में
तो लगा इस डायरी को
कहीं रख देनी चाहिए
अलमारी या किसी बक्से में तहाकर
नहीं तो देखूँगा इसे जब-जब
सुख की चाय में
घुल जायेगा दुख का नमक

बहुरे हैं दिन बरसों बाद
जब तरक्कीपसंद दुनिया के साथ
चल रहा हूँ साथ-साथ
पहले मुझे दिखता था पेड़
उसके हरे-पीले पत्ते
अब मैं ढूँढ़ता
उनमें सैकड़ों शेड्स

अब लिखूँगा भी तो
हकासल-पियासल कविताएँ नहीं लिखूँगा
कला की हर बारीकी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसके रूप-रंग-आकार
और अक्षर-अक्षर का रखूँगा ख्याल

सपाटबयानी की हद तक लिखी
जवानी के दिनों की जवान कविताओं को
अब देखते हुए भी लाज लगती है

मगर वे कविताएँ
प्रतिकार में, पहले से तैयार थीं
डायरी को कहाँ-कहाँ तो न छुपाया
पर उसमें लिखी हर कविता
मुझे शब्दशः याद थी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नरक

न प्यार
न घृणा

न दोस्ती
न दुश्मनी

न अपना
न पराया

न निकट
न दूर

फिर भी, साथ-साथ

तुम ही कहो दोस्त !
यह दुनिया कैसी है तुम्हारी !

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाबा बटेसरनाथ से भेंट

कहते थे बाबा बटेसरनाथ
कभी देखा है बचवा पुरइन का पत्ता
ओस की बूँद उस पर मोती समान
धरती पर मानुष उसी समान
यही बात कह गये थे
बाबा परमेसरनाथ

पूछते हैं बाबा !
कभी अँखियन पिया उस मोती को
नहीं पिया तो सुन
जैसे जल में मीन पियासी
तू भी पियासा जगत में

पुरइन का पत्ता ढूँढ़ा
गया पी उस मोती को
अब ढूँढ़ रहा
बाबा बटेसरनाथ को
यह कहने भर को
कि अब मैं नहीं रहा पियासा
नख से सिर तृप्त हुआ बाबा
और मुझे भी कोई नाम मिले

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भविष्यत्नाथ, वर्तमाननाथ, कि भूतनाथ
वीरभोग्या वसुंधरा के भोग के लिए
जरूरी है पहले बनना नाथ
जो नहीं
इस विश्वग्राम में अनाथ

मुझे ठीक याद है
कुछ इसी तरह की बात
कह गये थे
बाबा बटेसरनाथ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिंगपिंग[1]

दो फीट पाँच इंच के
एक अजूबा थे, तुम पिंगपिंग
और जैसे कि प्रायः होता है दुनिया में
तुम्हें जान पाया
तुम्हारी मृत्यु के बाद ही

एक अखबार में छपी थी
तस्वीर तुम्हारी
तुम एक जूते के साथ खड़े थे
और उससे थोड़े ही बड़े थे

अब मैं कैसे जान पाऊँगा?
उस तस्वीर से
तुम क्यों हँस रहे थे?
अपने आप पर या उन पर
जो तुम पर हँस रहे थे।

●

1. पिंगपिंग—दुनिया का सबसे छोटा आदमी जिसकी मृत्यु सन् 2010 में हुई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उचर तो कागा

नहीं रही धनमातो काकी
इतवारी फुआ
कहाँ गई रुक्मिणी भौजी, सत्ती काकी
जो बुढ़ा रहे बेटे को भी
गोदी का लाल समझतीं
प्यार-दुलार-हुलास से डाँटतीं
जब तक अर्थी नहीं उठ जाती
बेटे को दुनियादारी समझातीं

हो बेटा पड़ोस के शहर में भी
उसे परदेशी मानतीं
डूबते सूरज देव के हाथ
आशीष रोज परदेश भिजवातीं

इन दिनों बेटा इतना समझदार
कि समझाता माँ को
और माँ इतनी जानकार
कि सात-समन्दर पार को भी
स्वदेश मानती

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब न उठती हूक न फूटती रुलाई
आधी रात को
न माँएँ उचरातीं
कि उचर तो कागा
कब आयेगा मेरा, गोदी का लाल

माँएँ अब कर लेतीं फोन
या बेटे लैपटॉप पर
आमने-सामने कर लेते बात

कागा से छूट गये हम
कि हमसे छूट गया कागा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

महानगर

यहाँ तक आते
स्याह हो जाती नदी
अकुलाने लगतीं मछलियाँ

होने लगती संस्कृति बाँझ
हवाखोरी के लिए निकलती
हर साँझ, और
लौटकर रातभर
करवटें बदलती

एक रात नदी में
वह लगाती छलाँग
और नदी के जल में
हो जाती स्याह

सभ्यता, रात के अँधेरे में
करती तब हास।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इश्किया बाबा

दसों उँगलियों में उनकी
किसिम-किसिम की अँगूठियाँ थीं
उन दसों को मेरे सिर पर रख
मेरी आँखों को बाँचते टुकुर-टुकुर
दिया था उन्होंने आशीष
कि तुम शब्दों, कागज और कलम से
करते हो इश्क
तुम्हारा इश्क परवान चढ़ेगा
एक दिन तुम मजनूँ बनोगे
कविता तुम्हारी लैला

उनींदी हैं आँखें अभी तक
और मैं ढूँढ़ रहा हूँ अपने इश्किया बाबा को
ताकि दिखला सकूँ
अपनी कविता की पांडुलिपि
जो बरसों से पड़ी है
किसी प्रकाशक ने प्रकाशित नहीं की
कि गए वे दिन, हुस्न-इश्क के
इन दिनों लैला-मजनूँ की कविताएँ
पढ़ता कौन है ?
मुझे धर्मसंकट में डाल
किस नगर में बस गये इश्किया बाबा ?

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कठपुतली नाच

बस, कठपुतली की तरह
जो अनुशासित रहेगा
वही शीर्षस्थ बनेगा

यही हुई है राय
खास और खासमखास की

कठपुतली नचाने वाले
अब अपना काम
आराम से करेंगे
जब मन करेगा चरेंगे
जब मन करेगा पगुरायेंगे
योग करेंगे, भोग करेंगे
लोकशाही के रोग दूर करेंगे

अगर कठपुतली को क्रोध आया
दुख या संताप हुआ
मंच पर एक शो का अंत होगा

फिर एक शीर्षस्थ के चुनाव का
श्रीगणेश होगा।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने शहर में

किसी इतवार की शाम को
बाजार से अनमने फिरते
दिख जाता वह मित्र
और शिकायत से होती
बातचीत की शुरूआत
कि हुए बहुत दिन
दिखाने भर को मुँह
कभी आये नहीं तुम घर

फिर बड़ी मुश्किल से ढूँढ़ते
बातचीत का बहाना
हम बढ़ जाते आगे
मिलने का भरोसा देते

इन दिनों जब बरसों बाद लौटा हूँ
अपने शहर में
सिर्फ बची है शिकायत
और बचा है यह दोस्त
दोस्त तो दोस्त
इतना बदला है शहर भी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि स्वयं को पहचानना
अब मुश्किल हो गया है

अपना ही चेहरा दिखता है
सुबह को कुछ और
शाम को कुछ और।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पापकर्म

वे अपने लिए नहीं
हम सभी के लिए जीते हैं
खाते-पीते सभी के लिए
एक दिन मर्त्यलोक से विदा ले लेते हैं

वे दुनिया भर के राष्ट्रपतियों-प्रधानमंत्रियों, हाकिम-हुक्काम से
अपने लिए नहीं
हम सभी के लिए मिलते हैं
विश्व बैंक से लेकर तमाम अमीर देशों के आगे
अपने लिए नहीं
हम सभी के लिए करबद्ध होते हैं

देश की सीमाओं से लेकर
आम जन की समस्याओं तक
अपने लिए नहीं
हम सभी के लिए जूझते हैं

पंडितजी के सुग्गे तक से
देश की अर्थव्यवस्था के बारे में
अपने लिए नहीं
हम सभी के लिए पूछते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपने जीवनकाल में अपने लिए
वे करवट भी नहीं बदलते हैं
इसके बाद भी
हम उन्हें अभी तक
देवता नहीं, प्रतिनिधि कहते हैं

भाइयो ! इतना बड़ा पापकर्म
इसीलिए, हम सभी
हमेशा सर्वहारा रहते हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राष्ट्रीय अवकाश

आज वीररस के गीतों को
फिर से सुनने-सुनाने का दिन है
जलेबी-लड्डू जैसे
देशी मिष्टान्न खाने का दिन है

गलियों में क्रिकेट खेलने
रसोईघर में लजीज व्यंजन बनाने
मैदानों-पार्कों में घूमने
और 'देशभक्ति' को याद करने का दिन है

दुनिया को अपनी ताकत दिखाने
लोकतंत्र के कीर्ति पताका को
फहराने का दिन है

आज दिल्ली के लिए
गुमान करने का दिन
भूखे, नंगों के लिए
पुनर्जन्म में आस्था
बढ़ाने का दिन है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आसमान में
रंग-बिरंगे बैलून उड़ाने
और उन्हें देखते रह जाने का दिन है

सबको समान अवसर मिले
इसीलिए
आज राष्ट्रीय अवकाश का दिन है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक संतुलित आदमी के नाम

वे न तो कभी क्रोधित होंगे
न भरेंगे कभी अँकवारी में
न देंगे कभी सीधा-सपाट उत्तर
न स्वीकारेंगे मन-प्राण से

वे जब भी मिलेंगे
चकित कर देंगे, रंग-ढंग से
आपको लगेगा
इस आदमी का साथ है
पिछले जन्मों से

उनका संतुलन
आपको अन्वेषक बना देगा
आपकी उम्र कट जायेगी
यह जानने में
कि वे दोस्त हैं या दुश्मन।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जंतर-मंतर

दिल्ली में जो है मंतर
उसके खिलाफ गणमान्य
जाना चाहते करने अनशन
दिल्ली के ही जंतर-मंतर

उनको भरोसा, वहीं से होगी
हर समस्या छू-मंतर
वहीं तप करने से
इन्द्रासन हिलेगा
देवराज आ पूछेंगे
तुम्हारी इच्छा क्या है ?
वहीं से किया जा सकता उद्धार
तंत्र से लोक का

वाह रे दिल्ली
वाह रे तेरा मंतर।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस पार न जाना मानुषी

मानुषी मत जाना उस पार
उस पार जो लोग हैं
उनसे करना मत बात

शोख और नाजुक किशोरियों को
वे मुफ्त में बाँटते पंख
जिसने एक बार लिया हाथ
कभी लौटा नहीं अपने घर

वहाँ टोही हैं
कोई बटोही नहीं
जो बतायेगा तुम्हें पता
कि किस गुमनाम गली में
रहता है तुम्हारा प्रेम परकाश

संभव है मिल जाए कहीं
टोही बना किसी गली में
फिर, विरह-विदग्धा नायिका भी
नहीं रह पाओगी तुम
उस पार के लोग
कहाँ से शुरू करेंगे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और तुम कहाँ हो जाओगी खत्म
तुम्हें नहीं होगा ज्ञात

ऐसा ही, वक्त है निर्मम
सीने पर पत्थर रख
करना पड़ता है सब्र
तुम भी इस माया को जान
खूब आँसू बहा
भूल जाओ प्रेम परकाश को

फिर, फिर कहता हूँ
उस पार न जाना मानुषी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक अधेड़ का प्रेमपत्र

उस दिन फिर छत पर कपड़ा पसारते
मुझे देख मुसकाया तुमने
और मैं अपने बरामदे में बैठा रहा, बैठा रहा
जैसे कि उठा, तो उठ जायेगी देह

मैं तुम्हें बरसों से चाहता
पर मन, केले के पत्ते-सा काँपता
एक बूढ़ा आदमी मेरे भीतर खाँसता
बात-बात पर मुझे डाँटता

तुम्हारा, मेरे हृदय में वास
पर खेल खेलता, मेरी छलनी विश्वास

और चिन्ता केवल यही कि
चलता रहे ठीक-ठाक, मेरा भरा-पूरा परिवार
यही तो एक पूँजी होती, किसी अधेड़ आदमी के पास
इस आखिरी पत्र में
साफ-साफ कुछ लिखा नहीं
मुझे पता है, तुम सब कुछ समझ लोगी
वियोगी, योगी या भोगी चाहे जो समझो
मुझे क्षमा कर दोगी।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मिट्टी

जो कुछ था पास
उसे तुम्हें दिया

तुमने प्यार से मुझे
सूँघ लिया

हुआ रोम-रोम पुलकित
देह झंकृत
मिट्टी का बना मैं
मिट्टीधर्मी हुआ।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तारीख

एक तुम थी माँ
कि मुझे आज तक पता नहीं चला
अपने जन्म की सही तारीख

जब-जब तुमसे पूछा
तुम एक ही कथा दोहराती रही
कि महीनों से निकली नहीं थी धूप
हो रही थी रुक-रुककर बारिश
खेतों में डूब गई थीं फसलें
भात के साथ सब्जी देखने तक को
तरस गए थे लोग

मैं हर बार पछताता
आखिर किसलिए चाहिए ?
मुझे जन्म की सही तारीख
बहुतों की तरह नामालूम रहे तो हर्ज क्या है !

एक हैं, हमारे समय की ऐश्वर्या राय बच्चन जैसी माँएँ
जिनके गर्भाधान की खबर
बन जाती, सबसे बड़ी खबर
बाकायदा किया जाता ऐलान
कि जान ले दुनिया-जहान

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहले तो लगता था
दुनिया भर की माँएँ एक जैसी होती हैं
पर अब जा के जाना
माँ पहले होती है औरत
और दुनिया की हर औरत होती है, एक-दूसरे से कुछ अलग

एक तुम थी माँ
जिसको जब भी देखा, माँ देखा
भाई-बहनों को पालते-पोसते
हँसते देखा, रोते देखा
रात में चिहुँक-चिहुँककर जागते देखा
भरी दुपहर में बैठे-बैठे सोते देखा
महीने में एक-दो बार
बाबूजी के साथ हँसते-बोलते देखा
अपनी दुनिया में मग्न तुमने जरूरत नहीं समझी
कागज पर कहीं लिखा के रख लूँ
अपने बच्चों की जन्म की तारीख
अगर मृत्यु की निश्चित नहीं तारीख
क्या जरूरत, हो जन्म की तारीख
माँ, तुमने अनजाने दी बहुत बड़ी सीख

अब मैं खुश हूँ
चलो अच्छा है
नहीं, मेरे जन्म की तारीख

तुम कितनी जानकार थी माँ।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मध्यांतर के बाद की फिल्म

चालीस की उम्र पार किया आदमी
सिनेमाहॉल में बैठा वैसा दर्शक होता है
जो मध्यांतर के बाद
थोड़ा खुश, थोड़ा नाखुश
थोड़ा तृप्त, थोड़ा अतृप्त हो
फिर बैठता है फिल्म देखने, परदे के सामने

भाँप लेता, कहानी का लब्बोलुआब
हिसाब-किताब लगा लेता
फिल्म देखने का फैसला
सही या कि गलत

कभी भी फिल्म का हो सकता अंत
कैसा आतंक !

मध्यांतर के पहले की जिज्ञासा
होने लगती शांत
और फिल्म तो फिल्म है
गंभीर या हलकी-फुलकी, हास्य या व्यंग्य
सुखद या दुखद क्या फर्क
उसका होना है, एक अफसोस के साथ अंत।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खेल

आज उसके खेल में
मैं पहली बार शामिल नहीं था
जिस खेल में, वह मेरे घर-परिवार के बारे में पूछते
अपनी कामयाबियों का जश्न मनाता
मेरी नाकामयाबियों की चर्चा करते
थोड़ा-थोड़ा खुरचकर
मेरी बची-खुची कामयाबियों को
रोज मृत्यु के घाट भेजता

आज बैठाकर
जैसे ही उसने शुरू किया खेल
घुमा-फिराकर धीमे-धीमे
मैं पहले से बैठ चुका था दर्शकदीर्घा में

न मैं झुका रहा था सिर
न खुजला रहा था बाल
न हो रहा था रुआँसा
न पसीज रही थीं हथेलियाँ
न पसीने की बूँदें थीं मेरी कनपटी पर
और आज पहली बार उसका दमकता चेहरा
दमकने से कर दिया था इनकार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दर्शकदीर्घा में अकेले बैठा
मैं उस क्रूर खेल का अंदाजा लगा रहा था
जिसे खेलता है हर बड़ा आदमी
अपने से छोटी हैसियत वाले आदमी के साथ

वो था बरसों बाद जलता-बुझता
और मैं पहली बार
टाँगें फैलाए, आनंद ले रहा था खेल का।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हादसा

रीढ़ की हड्डी ही
निकाल फेंका है
और मुस्कुराता है वो
किसी बाजीगर की तरह

बात बनाने में उसका जोड़ नहीं
हर बात उसकी लगती
दर्शन की तरह

उसकी दोस्ती भी सभी से
और दुश्मनी भी सभी से
दिखता भी है, खिले फूल की तरह

वह जिससे भी मिलता
बेझिझक मिलता
दिलों में घुसता है, मुहब्बत की तरह

पछतायेगा वो, रोयेगा जार-जार
उसकी जिन्दगी गुजर जायेगी
एक हादसे की तरह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

समय

लेट हो जाने पर
रेल भी करती है मेकअप

बाहर निकलने से पहले
महिलाएँ भी करती हैं मेकअप

कहीं, समय बचता है
कहीं, खर्च होता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh-Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चिड़चिड़ेपन की दवा और एक बूढ़ा

चिड़चिड़ेपन की दवा
उस बूढ़े से मत पूछे कोई
नहीं तो वह और ज्यादा
हताश, निराश और चिड़चिड़ा हो जायेगा
कि जो चीज है इतनी स्वाभाविक
जैसे पृथ्वी पर पेड़, फूल, नदियाँ, समुद्र
उसके लिए दवा की जरूरत क्या है !

कैसे बतायेगा वह कि
दुनिया छोड़ते-छोड़ते
छूट जाता माया-मोह भी
नहीं बचता कुछ भी
ले जाने को साथ
जोड़-घटा के एक जो जीवन था
उसे भी ठगा-सा
आदमी करता रहता याद

कैसे बतायेगा कि
एक बेटी का ब्याह
एक कच्चा-पक्का मकान
बता देता दुनिया-जहान का सार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कि चिड़चिड़ा होना वैसा ही है
जैसे बालों का झड़ना, दाढ़ी का पकना
आँखों को चश्मे की जरूरत

अर्थाकर कहा जाए तो
इस चकमक दौर में, किसी भी चीज से जैसे ही पर्दा उठता
भेद खुल जाता
चिड़चिड़ेपन में कुछ और चिड़चिड़ापन मिल जाता

कैसे बतायेगा बूढ़ा !
कि जो जान लेता
उसे बताना नहीं आता
और इन दिनों कुछ बताने का भी
मतलब क्या है ?

किसे है फुर्सत
किसी के लिए
सबकी अपनी डफली
सबका अपना राग।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रवीन्द्र सरोवर के पानी में

आँखों की पुतलियों को फैलाकर
रवीन्द्र सरोवर को निहारता
कहीं दिख जाए कोई कमल-दल तैरता

पर नहीं
यहाँ सब कुछ निस्तब्ध, स्पंदनहीन

एक प्रेमी जोड़े ने तभी
एक-दूसरे को चूमते, चुहलबाजी करते
फेंका कोई ढेला
टप्प से ठहरे पानी में

उतराने लगे सतह पर
बस थोड़ी देर बाद
कई-कई कमल-दल
कि मुझे होने लगा भ्रम
यह रवीन्द्र सरोवर
कैसे रूप धर लिया
कमल सरोवर का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सुरमई से स्याह होती रात
एक अँगड़ाई के साथ बोली
यात्री, अब लौट जाओ अपने घर
इच्छामात्र से किसी को नहीं दिखता कमल-दल
जिस दिन तुम्हारे हृदय सरोवर में
तैरने लगेगा कमल
उस दिन संसार के हर पोखर, ताल-तलैया में
तुम्हें दिखने लगेंगे कमल-दल।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उलाहना

बेरोजगारी के दिनों में अकसर उलाहना देती थी पत्नी
मेरे कपड़ों को धोते वक्त
कि भूल-चूक से भी कभी निकलती नहीं अठन्नी-चवन्नी
कौन पूछे कागज के नोट को

उन दिनों मेरा बस एक ही सपना था
कि होता कोई जादू
और मेरी पतलून की जेब से
निकलते बहुत सारे रुपये-पैसे
और अचानक पूरे आँगन में बरसने लगती
पत्नी की खिलखिलाहट

उस जादू और पत्नी की खिलखिलाहट के इंतजार में
बरसों बीत गए
और अब जब मेरी पतलून की जेब से
अकसर निकलते हैं कागज के नोट और सिक्के
मेरा दुख, उलाहना देता

और मैं खोजता
पत्नी की खिलखिलाहट को।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विचार

बगल में बैठा बच्चा
टुकुर-टुकुर देखते, फेर रहा था जीभ
और मैं खा रहा था मिठाई
कैसे तो बन पड़ा
कि महीनों बाद रोटी और तरकारी के साथ
कागज में लपेट
पत्नी ने धर दी थी मिठाई
चलती ट्रेन में लगती है
मुझे बच्चों वाली भूख
और उस बच्चे से दृष्टि फेर
मैं देख रहा था बेमन खिड़की से बाहर

वहाँ धूप चढ़ी है
सहमे, ठिठके खड़े हैं मकान, पेड़
जहाँ-तहाँ कीचड़ में औंधी पड़ी हैं भैंसें
वृक्ष तले छहाँ रहे चरवाहे
कैसा तो उतान खड़ा था दिन
और वैसे में मैं सोच रहा था, खाने के बाद
क्यों न आज के उदास दिन पर ही कुछ लिखा जाए
पर बच्चा किए जा रहा था बेचैन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक आधी बासी मिठाई
अगर दे देता उसको
तो हरषा जाता बेचारा
मन भर जाता मेरा

तब से एक बार मुझे
और एक बार अपनी माँ को
देख रहा था बच्चा

मैं उन दोनों को देखते
न कुछ लिख पाया
उस उदास दिन के बारे में
और न बच्चे को दे पाया मिठाई।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दलदल

आज दिन भर
उसने दिए, एक से बढ़कर एक तर्क

सभी ने सुनी उसकी बात
मगर उसने नहीं सुनी किसी की
उसे देख मुस्कुराया कितनों ने
पर उसका चेहरा दिन भर
बना रहा जर्द

वह लोगों से मिलता रहा
अपनी जरूरतों को तौल
बिना जरूरत उसके हलक से नहीं निकला
एक भी शब्द

वह नहीं था किसी का शुक्रगुजार
चूँकि सभी, उसके कायल थे

वह रोज की तरह आज भी थका, उदास
देर रात को घर लौटा था।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लोकतंत्र का पहला पाठ

बाघ-बकरी
कुकुर-सियार
घोड़ा-हाथी
गाय और साँड़

जीवन-मरण, हानि-लाभ
यश-अपयश का कर त्याग
बहती गंगा में करें स्नान
एक साथ

फिर करें, सूर्य नमस्कार
कि हमारा लोकतंत्र
न हो अम्लान।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहर में बाबा

आये सोमवार को दिल्ली से
विदेशमंत्री
फिल्मिस्तान के हीरो मंगल को
एक अरबपति बुध को
राष्ट्रीय गायकों का जमघट गुरुवार को
शुक्र को था बुद्धिजीवियों का भ्रमण
शनि को हँसाये हास्य-कलाकार
बाबा पहुँचे रविवार

शहर के दिल, गाँधी मैदान में
प्राणायाम कराया
स्वाभिमान जगाया
देश का झंडा फहराया

शहर को कहाँ फुर्सत
कोई आए या जाए
उसके लिए क्या काशी ! क्या काबा !
कोई बेचने में मस्त
कोई खरीदने में व्यस्त

इस बार फिर, एक माह बाद
आने का वचन
दे गए बाबा।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जानकार लोगों के नाम

दौड़ती बसों की खिड़कियों से
देखते रहे लोग
अफसोस और दुख जताते

कारों में बैठे कई लोग
अभाव, स्वभाव और
दारू के बीच के संबंध पर
करते रहे ठहाकेदार बहस

तरह-तरह के जानकार
गुजरते रहे
पर किसी को नहीं थी जानकारी
कि जो सड़क पर पड़ा है
वह न दारू के नशे में
न है पागलपन का शिकार
न दिखाना चाहता खेल-तमाशा

दरअसल वह मरा है
पिछली रात किसी तेज रफ्तार गाड़ी का
हुआ है शिकार

वह सिर्फ लाश नहीं
एक शोक-संदेश है
अपने समय के जानकार लोगों के नाम।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक शहरी की
एक कथवाचक से भेंट

बिन सकपकाए
आराम से टहलते
चौक से मुड़ जाती है औरत
रात्रि के अंतिम प्रहर में

रिक्शे पर बैठा आदमी
लगता कुछ बुदबुदाने

रिक्शाचालक एक बार पीछे देख
फीकी हँसी मार
शुरू हो जाता
जैसे कोई कथा सुनाने

कि जेब में पैसा हो
तो शहर तो शहर
गाँव-गाँव, कस्बा भी नंदन-कानन, दिल्ली-लंदन
वह तो मात्र दर्शक
जिसका रिक्शा ही ओढ़ना-बिछौना है

अब छोटा-मोटा कस्बा भी
रातभर जागता है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जलते-बुझते रहते बिजली के बल्ब
कुत्ते भौंकते रातभर
पर अब खलल नहीं पड़ती
किसी को नींद में
सभी के सभी, हो गये हैं अभ्यस्त

कस्बे को पारकर
अब गाँव की सड़क थी
रिक्शाचालक बीच-बीच में अब भी
कथावाचक की मुद्रा में था
और शहरी मल रहा था आँख।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तालसोनापुर

दुनिया के हर शहर में
एक गाँव होता
जिसका नाम तालसोनापुर होता

उस गाँव में
भागती हुई, बेचैन दुनिया से अलग
भाव का भूखा प्यार में डूबा
एक देवदास होता

वहाँ एक पारो होती
अल्हड़ हवा-सी
ताल-तलैया, बाग-बगीचों में
प्रेम की रिमझिम बारिश में भीगते

होता चिड़ियों का कलरव
भरी दुपहरी में भी
रंग-बिरंगी तितलियाँ
करतीं फूलों से अठखेलियाँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उस प्रेम कहानी पर
गाँव के सभी निसार होते

न जाने क्यों!
तालसोनापुर की बहुत याद आ रही है
कि हमारी दुनिया का नाम कभी
तालसोनापुर हो तो, कैसा हो!!

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिता के आँसू

माँ की तरह जब-तब हरख
बरस जाने वाले आँसू नहीं होते पिता के
आँसू माँ का करुण जितना
पिता का सिरजता उतना ही दुख
जैसे कि फट पड़ी हो आकाश की छाती
भूल गए हों पखेरू अचानक पंख फड़फड़ाना
थर्रा कर रुक गई हो सहसा
पृथ्वी अपने वृत्त पर

जब एक-एक कर रोग आने लगते
स्थायीवास के लिए जर्जर देह में मित्र बन
हो जाता भरोसा कि जिंदगी
गिन-गिनकर लेगी अब प्रतिशोध
और वसूल करेगी सूद समेत पावना
तब भी पिता के नहीं बहते आँसू

पिता तब भी रोते हैं, मन ही मन
जब जवान बेटे के सहारे
आखिरी दिनों में रखते हैं
बड़ी मुश्किल से धरती पर पैर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
पिता बस रोते हैं बेटी की विदाई के वक्त
दुख के गहन दिनों में
या किसी मित्र को सदा के लिए खो देने पर

जब भी रोते हैं पिता
लगता है, घटने वाला है अघटन धरती पर।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक कवि को सुनते हुए

चीखने से लेकर स्वगत-कथन तक
सुनना चाहता था कवि को
देखना चाहता था शब्दों की धार
कर लेना चाहता था इकट्ठा
उन कविताओं के मर्म
जो थीं हमारे वक्त की सबूत

उसकी बोली, हँसी-मुस्कुराहट, सोच-विचार
किसी नये इलाके में पहुँचाते थे हमेशा
उसका मानना कि गुलाब के फूल
और कवि मन के बीच
पारस्परिक अटूट होता संबंध
कि उखड़ जाए एक पंखुड़ी भी
तो बिखर जाए फूल
इसलिए जीना ही चाहिए
कवि को, कवि का जीवन
कि कलि वृंत पर चटखती रहे

जैसे हुलसता है गुलाब कँटीली डाल पर
कवि मर्त्य में अमर्त्य का फूल बन महकता है
हमेशा से रहे दुःसमय के विरुद्ध

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंततः कवि के जीवन से ही
कविता को मिलता जीवन

उस कवि को सुनते जाना
कैसे सुना जा सकता समय को
सिर्फ कान से नहीं
लाखों-लाख रोम-कूप से।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बातचीत

और करीब
तनिक और, और करीब आओ
इस कविता के पास बैठ जाओ

पढ़ो, देखो शब्दों को फिर-फिर
और सोचो
बल मत दो माथे पर
रखो छाती पर हाथ

कर लो पलकें बंद
कुछ देर के लिए ही
और हो सके तो हो जाओ ध्यानस्थ

देखो, जरा और करीब से देखो
एक कहानी थरथराती मिलेगी
प्रायः धूसर रंग में, किसी कवि की

उस कहानी में दिखेगा जरूर
एक आदमी तल्लीन
अपने से करता संवाद
कभी उदास, कभी होकर प्रफुल्ल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
सुन सको तो सुनो
उस बातचीत के हजारवें अंश को
उसमें केवल हमारा सुख-दुःख ही नहीं शामिल
पेड़-पौधे, पशु-पक्षी सभी शामिल मिलेंगे

लोगों का कहना है
वह आदमी बातचीत करने के भी लायक नहीं
बेचारा, मतिभ्रम का मारा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

निहाल होने के दिन

एक कामकाजी आदमी के लिए
जब निहाल होने के दिन थे
रिटायर हुए उसे कुछ ही दिन हुए थे
और बत्तीस दाँतों के बीच में जीभ की तरह
बत्तीस बरस बिताकर
वह बाहर निकल आया था
ऐसे सुदिन में
एक कागज पर मगजमारी करते, बड़बड़ाते
हमेशा लगाता रहता हिसाब-किताब

पता नहीं क्यों !
वह सात में पाँच जोड़ता
और बारह लिखता
फिर खुश हो
बारह में अठारह जोड़
उसमें से घटा देता तीस
हर बार बाकी बचता फुस्स
और वह फिर उदास हो जाता

जब-जब वह उदास होता
फाड़ देता कागज
फेंक देता खिड़की से बाहर।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुखबर

बहुत दिनों बाद
कुहासे में डूबा
ठंढ से ठिठुर रहा था
मेरा शहर

दूर से लगा
ढिबरियाँ जल-बुझ रही हैं यहाँ-वहाँ
सोख लिया है
शहर के चकमक को
कुहासे ने

बड़ा भोला, प्यारा-सा लगा
मेरा शहर, पहली बार
ठहरा हुआ, चकमक से दूर

अपने शहर को बताऊँगा जरूर
यह सुखबर।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अपत कँटीली डार

आँख खुले हमारी
इसीलिए तो छपते रहे अखबार
टी.वी. पर खबरिया चैनलों की भरमार
चर्चाओं, विचार-विमर्श और घोषणाओं का
विकसित होता बाजार

आँख खुली तो खुली है बरसों से
छपते रहे अखबार
पल-पल बदलती दुनिया के साथ
गबन, लूट, बलात्कार और हत्याओं के
बदलते रहे दृश्य

खुली आँखों से क्या हुआ !
कुछ बदला क्या !
कहीं अमीरों की गाड़ी लेट हुई !
गरीब चढ़ पाए गाड़ी पर !
जो पीछे थे, क्या आगे हुए !
जो आगे थे,
देखा मुड़कर कभी पीछे एक बार

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुली आँखों ने जो देखा
बंद आँखों के सपनों को भी
फालिज मार गया
ऐसे हुए कठकरेज कि
जीने का एक बहाना, हमारे आँसू भी
आँखों में सूख गए

मालिक लोगों से इल्तिजा है
कुछ दिन बंद रखें चैनल
न छापें अखबार
स्थगित करें चर्चाएँ
बंद करें विचार-विमर्श

खुली आँखों की दुनिया को
आँख बंद कर करने दिया जाए जज्ब
ताकी कभी दिखे हमें भी, आर-पार संसार

क्या हमारी दुनिया है
सिर्फ अपत कँटीली डार ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुशरंग तितलियाँ

छुटपन में तितली पकड़
हथेली पर रख निहारते रहना
न जाने उसे सुकून मिलता था कैसा
बच्चा ही तो था !

एक दिन एक तितली के पर टूटकर
रह गए उसकी उँगलियों में
डबडबा गई थीं आँखें उसकी
यह सोचकर कि
अब तितली कभी उड़ नहीं पाएगी
धूल, पाँक-कीच में गिर मर जाएगी
वह रोता रहा झर-झर
बच्चा ही तो था !

फिर उसने कभी
किसी तितली को पकड़ने की जिद तो क्या
कोशिश भी नहीं की

अधेड़ होने के बाद भी
वह तितलियों को ढूँढ़ता
उन्हें देखता, मुस्कुराता जाने क्या-क्या सोचता

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
न जाने क्यों उसे यकीन था
कि इन बहुरंगी तितलियों के कारण
यह दुनिया, आदमजात का आशियाना है

तितलियों को सताने वालों को
वह शैतान मानता
जो हमशा से भगवान की बनाई दुनिया में
मौजूद हैं सौन्दर्य का विलोम बनकर

इन दिनों वह उदास, बहुत उदास
रहता है दोस्तो !
जब तितलियों को किसी हथेली पर
रक्स करते
और खुशरंग देखता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ऐसा क्यों कविते

असमय जागना
असमय सोना
असमय खाना

कोई भी काम नहीं समय पर

क्षणभंगुर इस जीवन में
जिसके लिए
सब कुछ असमय
लाख बुलाने पर भी
कभी समय पर
वह आती नहीं पास

ऐसा क्यों कविते?

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अदूरदर्शिता

निकट को अनदेखा कर
न समझ, न जान
देखना दूर, बहुत दूर

ऐसी दूरदर्शिता का आशीष
अब नहीं दीजिए बाबा
ज्ञानी, गुणीजन
अग्रज, चिंतकगण

देना ही है
तो दीजिए
हम में भरे-अदूरदर्शिता
कि देखें पैर तले की जमीन

बहुत हो गई दूरदर्शिता !

ऐसे मनस्वी शब्दों को
अब किताबों में
विश्राम दीजिए बाबा।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तौल

दूसरे के बाट से
तौलोगे जब भी
स्वयं को
हमेशा कम रहोगे

तौलोगे तुम भी
दूसरे को
हमेशा ज्यादा रहोगे

सब इस तराजू का खेल है
जिसे बनाता है हर कोई अपने लिए।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चल चंदनवा

चल चंदनवा दिल्ली-बंबे
कमायेंगे, खायेंगे, हमारा भी होगा बल्ले-बल्ले

संसार की सुन्दरता, टी.वी. पर देखेंगे
फिल्मी सितारों से हम भी मिलेंगे
शेयर बाजार में पैसा लगायेंगे
यूरोप-अमरीका की, जिन्दगी को जियेंगे

वहाँ पर लगता है विमर्शों का मेला
गोष्ठी, सम्मेलन, सेमिनारों का ठेला
चर्चा और चिंतन में खूब भाग लेंगे
बुद्धिजीवी बन, ठाट से रमेंगे

दौलत-शोहरत और ताकत के इस देश में
दिन-रात कमाएँगे इज्जत-आबरू बढ़ायेंगे
जब जैसा, तब तैसा हाल बखानेंगे

अपने गाँव, अपने देश से भी
बड़ा है बाजार चंदनवा
जिसके चाकर हैं, आम और खास चंदनवा
उसी के परताप से चल रहा यह देश चंदनवा

वह नहीं चाहता, इस देश में गरीब रहें
माथे पर रख हाथ, तकदीर पर सिसकते रहें

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उसे घृणा है बेबसी, दरिद्रता के दृश्य से
इसीलिए दिन-रात वह, हॉलीवुड-बॉलीवुड के फोटो चिपका रहा
हर चमकदार चीज को गाँव-गाँव बेच रहा

हर आदमी, मकान को दुकान बना रहा
क्रिकेट की एक-एक गेंद
करीना के एक-एक ठुमके पर
नाच रहा, गा रहा, बाजा बजा रहा
जहाँ दिखता अँधेरा, वहीं आतिशबाजी करवा रहा
और भौचक है, अपना गाँव चंदनवा
रोपनी, सोहनी, चरवाही में
मोबाइल है, सबका कान चंदनवा

गाँव-गाँव में दूध से सस्ती, देशी दारू
गुटका, ब्लू फिल्म, नशीली दवाई
वह नहीं चाहता जीवित रहे, कोई गाँव, चंदनवा

अब किसी के आगे रोना नहीं
कोई किसी को देता नहीं
किस्मत को कोस, तिल-तिल जलना-मरना नहीं
अपने हक को छीनने की खातिर
चल चंदनवा दिल्ली-बंबे, इस हफ्ते या अगले हफ्ते

चिरई-चुरुँग की कथा सुनाते
ग्राम-देवता के गुण उचारते
बीते सालों-साल चंदनवा
कहाँ से कहाँ, भागा देश चंदनवा

जन-जन तक जनतंत्र
और शासन आपके द्वार
किसी माया के फेर में
अब नहीं, फँसना चंदनवा।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भाग्यवान

यह सोचना भी कि
होता भाग्यवान
मुझे हमेशा अभागापन लगा

शायद इसीलिए, तुमने भी
मुझे नहीं समझा अपने लिए सौभाग्यवान
मुझसे दूर
तुम चली गई, सौभाग्य के साथ

मुझे क्यों होता दुख ?
क्यों न होती खुशी !

अब तुम्हें भी,
जीवन भर पढ़ूँगा
जीवन भर लिखूँगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चुटकी भर दुख

यही तो कहकर गया था
कि लौट आऊँगा
पर अभी तक नहीं लौटा, मेरा दुख

कहा था उसने
कि मुझसे अच्छा दोस्त
उसे कहाँ मिलेगा !
जो सुख में भी
अपने दुख से खुश रहेगा

उसने ही बताया था
किसके मन भाता है जाना अकेले
किसी मरियल स्टेशन के प्लेटफॉर्न पर
अखबार बिछाकर सोना
और ऊँघते रहना शंटिंग ट्रेन की तरह

सिर झुकाये, चिंतामग्न देख मुझे
अड़बड़ाते-बड़बड़ाते गया था

न जाने क्यों, कह रहा था !
कि अब छोड़ देगा मेरा साथ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जो मुझे जानते हैं, उन्हें बतायेगा
कि कैसे मोरपंख की भाँति
किताबों के बीच
उसे सहेजकर रखता हूँ
और दुनिया से करता रहा छल
अपने सुख को दुख बताकर

वह ढाह देना चाहता
एक-एक ईंट
जिससे बना लिया मैंने
एक छोटा-सा घर
और काट रहा जिन्दगी

कैसा वक्त है भाइयो !
सुख तो सुख
दुख से भी सहन न हुआ
मेरा चुटकी भर दुख !

अभी तक वह नहीं मिला
और उसे मैं
ढूँढ़ने में लगा हूँ
गाँव-गाँव, नगर-नगर, डगर-डगर

न जाने,
कहाँ छुपा है ? पहली बार
मुझे अकेला छोड़कर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शहाब भाई की कविता

न सुंदर, न धनी, न आकर्षक, न क्यूट
न किसी कोण से फोटोजेनिक
बैठते तो बैठे रहते
खड़े तो खड़े रहते
कुर्सी पर बैठते ही ऊँघने लगते
लुढ़क जाती गर्दन
मुँह से निकलती रहती लार

किसी स्टेशन पर बैठ जब करते
ट्रेन का इंतजार
आने-जाने वाली हर ट्रन को देखते
किसी अजूबे की तरह
सवारियों में कुछ ढूँढ़ते
और तुड़ा-मुड़ा एक कागज निकाल
हठात् कुछ लिखने लगते
आँख बंद कर रह-रह बुदबुदाते
फिर चाय की चुसकी लेते
निकल जाते स्टेशन से बाहर
कागज को फाड़

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

कागज पर कुछ कविताएँ भी सहेज कर

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कभी नहीं रख पाए शहाब भाई
पर जब कभी वे बोलते
मैं अपनी कविताओं के लिए
इकट्ठा करता शब्द और पंक्तियाँ
उन शब्दों के साथ
नये-नये इलाकों में
घूमने-फिरने जाता
और चाक्षुष बिंब लिये लौटता

वे जब चुप रहते, साथ-साथ चलते
मैं कविता के लिए ढूँढ़ता कोई नया विषय

अब मैं बरसों से ढूँढ़ रहा
शहाब भाई को
उनकी बहुत सारी अधूरी कविताएँ
मैंने कर ली हैं पूरी

कब ! किस गाड़ी से? कहाँ चले गए शहाब भाई
पता ही नहीं चला
कुछ लोगों का कहना था
वे पागल हो गये थे
किसी ट्रेन में बैठ गये होंगे
दूर-दराज के सुनसान स्टेशन पर
कभी उतर गये होंगे
और मर-शिरा गये होंगे

उनकी कविताओं को
जब-जब देखता हूँ

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हर पन्ने पर लिखा मिलता है
शहाब भाई, शहाब भाई, शहाब भाई
और जोहता हूँ
कहीं किसी सड़क पर, रेल की पटरियों के किनारे
किसी पार्क की बेंच पर अधलेटे
मिल जाएँ शहाब भाई।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेवजह का दिन

दिनभर
थक-हारकर
आज बैठना भी नसीब न हुआ
होती रही
हँसी-ठट्ठा, भागदौड़
फोन पर बातचीत, गपशप

किसी अपने से
आज मिल न सका
पहली बार, उदास
कुछ देर चिंतामग्न हो
डूब जाने का वक्त न मिला।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सलामत

इस बार भी
जब गाँव में आग लगी
सिर्फ झोंपड़ियाँ जलीं

बकरी बेच रखा था
टूटी खपरैल बदलवाने को
बुढ़न काका की वह सारी रकम
खाक भई

बरसों खरीदी गई
शोएब मियाँ की लुंगी-बनियान
राख हुई

गाँव के दक्षिण
धूल के साथ, उठता रहा धुआँ
निरखती रही कौओं की पाँत

सलामत रहे, ईंट के मकान
हरखते, झोंपड़ियों की दशा पर
चले थे हमसे आँख मिलाने
पिछड़े कहीं के !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

झोंपड़ियों में कानाफूसी हुई थी
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
जलने से पूर्व
कि सदा-सलामत नहीं रहता
किसी का गुरूर।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहचान

फूट-फूटकर रोने के बाद
स्नान किया स्त्री ने, और जब
आईने के सामने खड़ी हुई तो
कोई और ही खड़ा था उस दिन

चमक रही थी कटवर्क की साड़ी
मैच करता ब्लाउज
दमक रही थीं सोने की चूड़ियाँ
डोल रही थीं कानों में बालियाँ

स्त्री आज से
अपने मकान के अहाते में
घूमेगी शान से
सज-सँवरकर जाएगी हाट-बाजार

आज से आस-पड़ोस में किसी को
पहचानेगी नहीं
आज से लोग
उसे पहचानेंगे।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

होड़

उनमें होड़ थी
अपने हाकिम के बारे में
बारीक से बारीक बात जानने की

उनमें होड़ थी
हाकिम के बारे में पीठ पीछे
एक से बढ़कर एक अपशब्द कहने
और बगावती तेवर अख्तियार करने की

उनमें होड़ थी
हाकिम से करीब
और दूर रहने की

इस होड़ को हाकिम जानता था
और हमेशा अमनपसंद और तरक्कीपसंद बना रहा
दिन दूनी-रात चौगुनी
फलता-फूलता रहा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर्वसम्मत

यहाँ लिखने भर को
धर्म-सम्मत
तर्क-सम्मत
विवेक-सम्मत

पढ़ने भर को
न्याय-संगत
विधि-संगत

कहने भर को
नियम-सम्मत
शास्त्र-सम्मत

मगर हमेशा से
कुछ लोगों के पास
एकाधिकार
जो करते रहे
फैसला सर्व-सम्मत

अब हमारे जनतंत्र में
सभी को छूट, समझते रहें, सब कुछ को
अपने ढंग से स्वतंत्र होकर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे कुछ अग्रज हमारे

उन्होंने सिखाया
प्यार के रूमाल में रखना विष
कमीज की जेब में रखना
ईर्ष्या, द्वेष, जलन, चिढ़

पतलून की जेबों में
रखना फरेब, धोखा, मक्कारी
और घृणा को
मुस्कान के सात तह में छिपाकर

उन्होंने सिखाया
हरेक आदमी पर करना शक
मिलना सभी से
पर नहीं करना किसी पर एतबार

वे अनुभवी, रसूखदार लोग थे
जिन्होंने हमें जीवन का ककहरा पढ़ाया

वे ही लोग तमाम गोष्ठियों, अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं
और अपनी किताबों में
तड़पते, कलपते रहे

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मनुष्यता के रसातल में चले जाने
और समय के कुरूप हो जाने पर
लिखते रहे

वे हमेशा उचारते रहे कि
संसार में मनुष्य से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं
मगर आपस में भीतरघात कर
हमें घात-प्रतिघात का पाठ पढ़ाते रहे

बेदाग न बचे कोई
इसके लिए करते रहे, एक-दूसरे को दागदार
और हमेशा दो मिनट का मौन साध
दिवंगत को श्रद्धांजलि देते रहे

मौकापरस्ती तो कोई उनसे सीखे
कब उल्टा, कब सीधा चलें
कि स्वयं उनको भी कभी पता न चले
वे एक से बढ़कर एक बहुरूपिए
हमारे अग्रज तुल्य
शायद यह नहीं समझ पाए
कि सबसे पहले उन्हीं से
हमारा उठ गया विश्वास

आज उन्हें भी शिकायत है
अपने अग्रजों का इस शहर में
कोई नहीं करता सम्मान।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कागज-कलम

कमीज की जेब में
महीनों रखा रहा
दो-तीन तुड़े-मुड़े कोरे पन्ने
कि जब कभी
कौंध जाए कोई भाव
गहन हो जाए विचार
तो उतार लूँगा कुछ पंक्तियाँ
लिखने के लिए कविता

पर नहीं आया कोई भाव
कि करता विचार
और अंततः फेंक दिए पन्ने
फाड़कर डस्टबीन में

हफ्ते-महीने बाद सड़क पर चलते
देखा सड़क किनारे, कोयला फोड़ते
कोयले के रंग में रँगी औरत को
जाने क्या जादू था उसमें
कि मैं भी डूब गया
कोयले के रँग में

आज कागज जेब में नहीं
कलम किस पर लिखे ?

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जंगबहादुर उर्फ जँगली

जंगबहादुर कब बन गए जंगी
और फिर कब हो गए जँगली
खुद उनको भी पता नहीं चला

माँ-बाप ने कभी बड़े अरमान से
उनका रखा होगा नाम
पर भरी जवानी में भी
नहीं था उनकी देह पर
पाव भर मांस
न पैर में चप्पल
कपड़ा वही जो मिल जाए—फाटल-पुरान
तीज-त्योहार, किसी के तिलक-विवाह में

बच्चे तक उनसे करते मजाक
कि अब आएँगे घर उनके ससुर जमराज
दुल्हिन मरन कुमारी
शादी तो तै है कब से
पचाठी हजार नकद पर

नालिश और शिकायत करते
उन मनबढ़ुआ लड़कों का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और उसी बहाने, दया का पात्र मान
उनके घरवाले, कभी करा देते नाश्ता, खिला देते खाना

जंगबहादुर, पेट के लिए जंग लड़ते
बुढ़ापे में बन गए जँगली
जब भी दिखते गाँव में
किसी भुतहा पेड़-सा लगते

जहाँ से गुजरते, लगता
उनके साथ-साथ चल रहा है जंगल
भूख और चीख की आवाज लिये।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

साथ

दोस्तो, वह मोहभंग का समय था
कि जब पूरा का पूरा शहर
हँसी-ठहाकों की गूँज के साथ
भाग रहा था, नाक की सीध में
पश्चिम की तरफ

मैं निपट अकेला, चुपचाप
बुखार में अर्राता-बर्राता
जा रहा था पूरब
भारी कदमों से

मेरे आगे-पीछे भी
मेरे जैसे लोग थे
पश्चिम के सफर के खिलाफ
हँसी-ठहाकों से अलग
अपने में लीन

न हमारी देह में उतनी ताकत
न जेब में उतनी बरकत
न कोई क्रांतिकारी सोच

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाँ, एक बात थी जरूर
हृदय, भाव से भरा
और कुछ कविताएँ
साथ थीं कागज पर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कामरूप

यहाँ काम रूप बदलकर
रोज साँझ को निकलता है
हो न हो, होगा
यहीं का निवासी
पर उपलब्ध नहीं कोई ग्रंथ
जिसमें ढूँढ़ ले कोई
इसका प्रमाण

यहाँ रहती हैं जादूगरनियाँ
जो बना देती हैं आदमी को पशु-पक्षी
अजब उनका रूपजाल
गजब मायाजाल
दादी, नानी से सुनी-सुनाई बातों का
कोई, कैसे खोज ले आधार

पर इतना तय है
कि अपरूप को भजता पुरुष
यहाँ पहुँच बन जाता होगा बुत
निहारते सौन्दर्य को एकटक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आता होगा जिस गाँव, नगर से
बिसर जाता होगा, उससे लौटने का पथ
जितने लोग, उतनी तरह की बातें
कथा, किंवदंतियाँ यहाँ के बारे में
पर कभी, किसी ने पूछा नहीं होगा
सोए पड़े बाँसवनों से
कामरूपिणियों की व्यथा

दूर-दूर तक फैले वन-प्रांतर में
रह-रह होती बूँदाबाँदी
और उसमें घुलते सौन्दर्य से
कभी किसी ने पूछा नहीं होगा
कि तुम उदास, पतझड़ क्यों बने हो

सैकड़ों-हजारों साल से
काम और रूप की
निःशब्द कथा, कहता है कामरूप।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

क, ख, ग

आँखों के सामने प्रत्यक्ष रहें
कवितामय शब्द, पंक्तियाँ
उसी के लिए दिनभर में कुछ घंटे
हर घंटे में कुछ मिनट
और मिनट में कुछ पल ढूँढ़ता रहा वह

पत्नी के साथ पति
बेटा-बेटी के साथ पिता बना रहा
मगर भीड़-भरे प्लेटफॉर्म पर भी
कविता की पंक्तियाँ बुदबुदाता रहा

बाबूजी के सामने बचपने में भी
बोल-बोलकर अंग्रेजी की किताब रटता रहा
और नजर बचाते, पाठ्यपुस्तकों के बीच
कहानी, कविता की किताब पढ़ता रहा
बस, इतना भर सचेत रहा कि
हो न जाए किसी क्लास में फेल
और बाबूजी की नाक कटने से बचाता रहा

मौका नहीं दिया भाई-बहनों को
यह कहने का

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
कि जब आगे का हल ही मुड़ गया
गलत लीक पर
चलें हम कैसे लीक पकड़कर

एक अदद पेटभरुआ नौकरी के लिए
वह सालों-साल रटता रहा
नदी, पहाड़, फूल, पेड़, पौधों से लेकर
राजा-महाराजाओं, प्रधानमंत्रियों-राष्ट्रपतियों के नाम
कॉपी में लिख-लिख काटता रहा
गणित के सवाल
मगर ऐसे में भी अपने प्रिय कवियों की कविताएँ
हमेशा रखा रहा पास

जिनसे जितना लिया
उन्हें उससे अधिक चुकाने में लगा रहा
ताकि रहे नहीं किसी को, बिन्दु भर शिकायत
पर आज तक कोई नहीं मिला
जो हुलसकर एक बार कह देता
कि जाओ, आज दिनभर
लिखते रहो, पढ़ते रहो
अपने जीवन का—क, ख, ग

अब बहुत हुआ, दुनिया में, दुनिया का
देना-पावना।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सुखमय प्रस्थान

अभी कुछ देर पहले
गली के एक मकान से
श्मशान-घाट के लिए निकला है
एक वृद्ध का शव

कुछ दिन पहले ही
वे पिला रहे थे डाँट
सब्जीवाली को, बेडौल तराजू रखने के लिए

कुछ दिन पहले ही
वे पैदल गये थे बाजार
अपनी बड़ी पतोहू के लिए खरीदने
आँवले का अचार
कुछ दिन पहले ही
अपने मकान के गेट को, नये ढंग से
करवाया था निर्माण
जो उनके मकान को बना रहा था भव्य

कुछ दिन पहले ही
अपने किराएदार को
समय पर किराया नहीं देने के बदले
किया था निकाल बाहर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गली के लोगों की राय थी
अच्छा हुआ हँसते-खेलते, चलते-फिरते
खाते-पीते चले गए
इन दिनों इससे अच्छा
और क्या हो सकता है
सुखमय प्रस्थान।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छठी इंद्रिय

जिस दिन उस लड़की ने दोस्तों के बीच
मेरी आँखों पर लगाया था इल्जाम
कि वे कतई भोली, भरोसेमंद नहीं हैं
और कोई लड़की नहीं कर सकती मुझ पर एतबार

मैंने पहली बार आईने के सामने
अपनी आँखों में झाँका था
और ख्वाहिशमंद था कि काश : मेरी आँखें
अंतहीन गहरी खाई होतीं
और मैं उसमें कूद, दे देता प्राण

मुझे भरोसा था लड़कियों की छठी इंद्रिय पर
जिसके बारे में सुना था कि
उससे नहीं रह सकता कुछ भी गोपन
सात तहों को भेदकर ये भाँप लेती हैं पुरुषों की मंशा

जैसे-जैसे बढ़ रही थी उम्र
वैसे-वैसे अपनी नजरों से ही गिरता गया था मैं
नजर मिलाने से बचने लगा था
अपनी भौजाइयों, सहपाठी लड़कियों से
कि पता नहीं, कब कौन चोरी पकड़ ले मेरी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक नवजात को गोदी में, दूसरे की उँगलियाँ थामे
वही लड़की मिली थी बरसों बाद
लुटी-पिटी एक गठरी भर बची थी
अपनी आँखों में अफसोस और दुख का काव्य-संग्रह लिये
उसे उसी लड़के ने दिया था धोखा
जिसकी आँखों में उसे दिखी थी भरोसे की नदी बहती हुई
सम्पन्नता की बत्ती जलती हुई
उस दिन फिर, आईने में देखी थी अपनी आँखें
उन आँखों में अथाह अवसाद था मेरे लिए
कि एक छोटे-से जीवन को, बेमतलब ही गुजार दिया

अपने को छिपाता रहा
अपनी ही नजर से।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कामाख्या

इस जगह का नाम कभी
कामेच्छा ही होगा
बतकही के दौरान, चाय की दुकान पर
एक बुजुर्ग ने बताया था
पर किस किताब में ढूँढ़े कोई
और जोड़ ले
कामाख्या के साथ
कामेच्छा का संबंध

जब आषाढ़ में हो रही हो लगातार
रिमझिम बारिश
और धूप कर रही हो मान-मनौव्वल
एक बार खुलकर, लेने के लिए साँस
वैसे में, मैं निकल पड़ा सड़क पर
कि कहीं, कोई मिल जाए सूत्र
और पता लग जाए, कामाख्या का मर्म

मर्म ढूँढ़ने की यात्रा में
दिखीं, वहाँ अद्भुत सौन्दर्यमयी स्त्रियाँ
जिनके कपोलों से हो रही थी रूप की बूँदाबाँदी
और उसमें आषाढ़ का जल मिल
कर रहा था केलि-क्रीड़ा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शायद इसी तरह की बारिश में
कभी रुक्मिणी होगी दृष्टि पथ पर
और भगवान कृष्ण के वक्षस्थल में
कमल-दल की तरह, तैरने लगी होगी कामेच्छा
करना पड़ा होगा गंधर्व विवाह

शृंगार रस की बारिश में भीगते
बिना किसी किताब को ढूँढ़े
कागज पर कुछ लिखते
घूम लिया कामाख्या

कुछ-कुछ समझ लिया उसका मर्म।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घोड़ा और घास

घोड़ा भी क्या करे !
नहीं चरे घास
तो मरे

और घास भी क्या करे
अप्रतिरोध को अभिशप्त

भवसागर के बीच
हम ढूँढ़ते रहे वह द्वीप
जहाँ मित्रता हो कभी
घोड़ा और घास की
आम और खास की

इस मित्रता के लिए
नाव पर हिचकोले खाते
चलो, आज एक और कविता लिखते हैं।

●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढील हेरती लड़की

ट्रेन के इंतजार में
ऊबे हुए लोग
जब ऊँघने लगे थे प्लेटफॉर्म पर
सैकड़ों आँखों से
तुम ढील हेर रही थी लड़की

इस तरह लीन थी
जैसे तुम्हें चुनना है
सड़क से एक-एक कंकड़
फसलों से साफ करना है
एक-एक खर-पतवार

तुम्हें पता कहाँ होगा !
बहुत सारे लुप्तप्राय गीतों व दृश्यों की तरह
तुम्हारा ढील हेरना
कभी सुनाई पड़े किसी लोकगीत में
दिखाई पड़े किसी चित्र में।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुवाद

न छुई जा सके
देह
न सूँघी जा सके
गंध
न लिया जा सके
रस
न समझा जा सके
मर्म

फिर भी काव्यप्रेमी
पढ़ते
दुनिया भर की
कविताओं के अनुवाद

अब उस प्रेम का
कौन कर सकता अनुवाद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस पार से

पहाड़ के उस पार
आदिमरात्रि की महक
वर्षा, ताप और अभाव
रोते-बिलखते बच्चे
जवानी में बूढ़ी होती औरतें
असमय मृत्यु की बाट जोहते बूढ़े

वहाँ, पेट ही पहाड़

चलो, कुछ रचा जाए
उस पहाड़ पर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विषाद

उसने तारींफ की
कलाइयों में जँचती कत्थई चूड़ियों
पाँवों में खिले महावर
दमकती लाल बिंदी
चम्पई रंग की साड़ी
और जामुनी नेल पॉलिश की

उसने तारीफ की
नये फैशन के चप्पलों से लेकर
उँगलियों में पहनी सलीकेदार अँगूठियों तक की

कानों में झूलते झुमकों पर तो
वह मुग्ध ही हो गया

मगर यह नहीं कहा
कि तुम सुन्दर लगती हो।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अंतहीन

जिस दिन
फूल ही फूल खिले हों हर तरफ
दुनिया में जीना नेमत बन जाए

जिस दिन
लड़ने-मरने से ऊब जाएँ लोग
गुजरें तो, एक-दूसरे को प्रीतिकर लगें

जिस दिन
न भय, न चिंता, अलमस्त हों सभी
हवा बहे तो गुलाल बरसे

जिएँ और मरें ऐसे कि
बस, आना-जाना हो
घर से बाहर और घर के भीतर

हम उसी एक दिन के लिए
लिख रहे हैं कविताएँ
सैकड़ों-हजारों साल से
कि मर्त्य में मृत्यु
जीवन का अंत न हो।

•

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शब्द-शब्द

मिले मुझे आँख
जिसे हो पाँख

मिले नाक
जो सूँघ ले, चर-अचर की सुगंध

मिले कान
कि सुनाई पड़े
धरती की हर साँस

मिले हृदय
जहाँ पिपीलिका के लिए
हो एक शक्कर का दाना

मिले ज्ञान
जिससे जाना जा सके
अपना अज्ञान

मिले पैर
जो जाए उस आदमी तक
जो सदी के अँधेरे में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ढूँढ़ रहा है
एक माचिस की तिल्ली

मिले जीवन, हर बार
जो सिर्फ सिरजे नहीं
जिए भी
शब्द-शब्द काव्य।

●●●

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

राजकिशोर राजन

25 अगस्त, 1967 को ग्राम – चाँदपरना, सिधवलिया, जिला – गोपालगंज (बिहार) में जन्म।

शिक्षा : एम.ए. (हिन्दी) एवं पत्रकारिता में डिप्लोमा।

'बस क्षण भर के लिए' और 'नूरानी बाग' काव्य-संग्रह प्रकाशित।

आरसी प्रसाद सिंह साहित्य सम्मान, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्, जनकवि रामदेव भावुक स्मृति सम्मान एवं अन्य संगठनों द्वारा सम्मान। कुछ कविताओं का अंग्रेजी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद।

आजीविका : ट्यूशन से लेकर अखबार तक। अभी राजभाषा विभाग, पूर्व-मध्य रेल, हाजीपुर में नौकरी।

सम्पर्क : 59, एल.आई.सी. कॉलोनी, पत्रकार नगर, कंकड़बाग, पटना-800020

मोबाइल : 09905395614

ई-मेल : rajan.rajkishor65@gmail.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

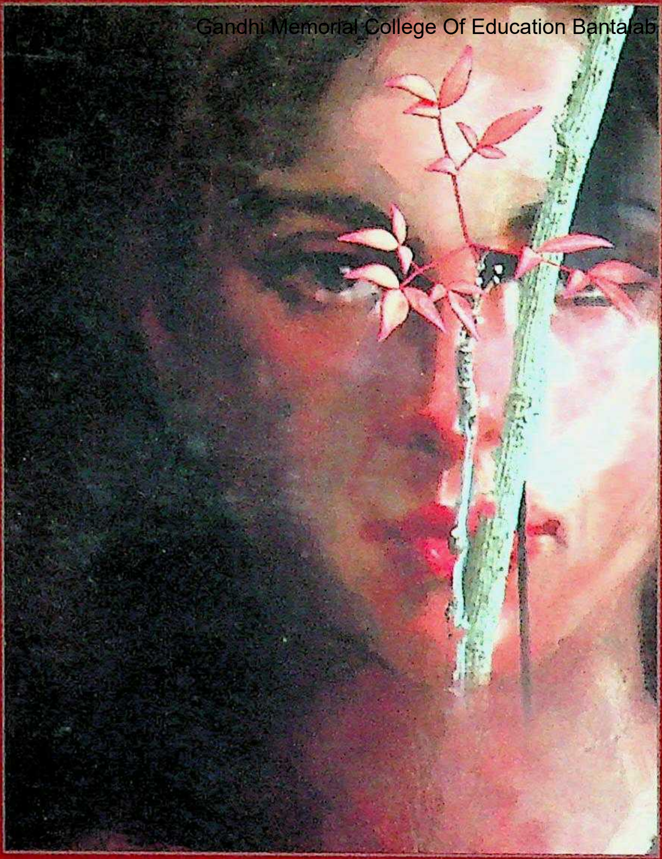

प्रकाशन संस्थान

4268-बी/3, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002
फोन नं: 011-23253234,65283371, फैक्स: 011-23287713
e-mail: info@prakashansansthan.com
www.prakashansansthan.com

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant